विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति

त्रैमासिक गृह पत्रिका

अंक - 30 पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति, केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, एफ-3, एमआईडीसी क्षेत्र, मरोल, अंधेरी (पूर्व), मुंबई -93 **अक्तूबर - दिसम्बर 2013**

सम्पादकीय

साथियों,

जैसा कि आपको विदित है, नया विद्युत अधिनियम अर्थात आइ.इ. -2003 वर्ष 2003 से प्रभावी हुआ है । पूर्ववर्ती विद्युत अधिनियम में आया हुआ मूलभूत बदलाव है, विद्युत क्षेत्र में स्पर्धा का प्रवेश! तब तक विद्युत के उत्पादन एवं पारेषण और कुछ अपवाद छोड़कर वितरण में केवल सरकारी संगठन थे । इसमें थोड़ी बहुत अंर्त-संगठनात्मक समस्याएँ थी और स्थानीय निकायों द्वारा यह सुलझायी जाती थी । निजी संगठनों के प्रवेश के साथ वाणिज्यिक हित अधिक महत्वपूर्ण हो गया ।

विद्युत मंत्रालय को इस बढ़ते हुए अंर्त-संगठनात्मक विवाद का अच्छी तरह पूर्वानुमान था और विद्युत अधिनियम 2003 में राज्य स्तरीय नियामक (एसइआरसी) और केन्द्रीय स्तरीय नियामक अर्थात सीईआरसी का प्रावधान था । निचले मंचों पर सुलझाये न जा पाये मामले के समाधान के लिए सीईआरसी के ऊपर एक अपीलीय अधिकरण है । यह पाया गया कि नियामक के निर्धारित दायरे में समस्या का समाधान लगभग असंभव है, क्योंकि इसमें नियामक खंड (क्लॉजेस) की व्याख्या सम्मिलित है । नियामक प्रक्रिया के माध्यम से विवाद निपटाना यह एक जटिल कार्य है तथा इसमें अधिक समय एवं आर्थिक व्यय होता है ।

इस विषय में पक्षेविसमिति बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । बहुत से निर्णय पक्षेविसमिति की बैठकों में लिए जाते हैं, जो उच्चतम मंच है और इससे कई असुविधाओं से बचा जा सकता है। घटक राज्य पक्षेविसमिति से सौहार्दपूर्ण समाधान की आशा रखते हैं तथा पक्षेविसमिति के विभिन्न मंचों के लिए आदर रखते हैं । यह गर्व की बात है कि विद्युत क्षेत्र में पक्षेविसमिति अहम भूमिका निभाती है ।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि में मुझे आवश्यक सभी प्रकार का सहयोग देने के लिए मैं, पक्षेविसमिति के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ ।

सु.द. टाकसांडे

सु.द. टाकसांडे
सदस्य सचिव

राजभाषा समाचार

- भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2012-2013 में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा हिन्दी में किए गए श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए इंदौर (म.प्र.) में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में कार्यालय का प्रथम पुरस्कार श्री सु.द. टाकसांडे, सदस्य सचिव ने दिनांक 13 दिसम्बर 2013 को ग्रहण किया । इस उपलब्धि में सराहनीय योगदान के लिए सुश्री तरूप्रभा शैल, सहायक निदेशक (राजभाषा) को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया । इस सम्मेलन में श्री शिव कुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक ने भाग लिया ।
- भारत सरकार, विद्युत मंत्रालय के संयुक्त निदेशक श्री आर.सी. शर्मा द्वारा पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति, मुंबई में राजभाषा नीति अनुपालन से संबंधित कार्य का दिनांक 23.12.2013 को निरीक्षण किया गया ।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 104 वीं बैठक दिनांक 21 अक्तूबर 2013 को श्री सु.द.टाकसांडे, सदस्य सचिव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । बैठक में राजभाषा नीति अनुपालन से संबंधित सभी मुद्दों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया ।
- अक्तूबर - दिसम्बर 2013 की तिमाही में दिनांक 09.10.2013 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 'एक्सल में कार्यालयीन कार्य' विषय पर श्री शिवा सुमन, सहायक निदेशक -I ने व्याख्यान दिया । कुल 2 अधिकारी एवं 9 कर्मचारियों ने इस कार्यशाला का लाभ लिया ।

सुविचार

मुटठी भर संकल्पवान लोग,
जिनकी अपने लक्ष्य में
दृढ आस्था है,
इतिहास की धारा को
बदल सकते हैं ।

- महात्मा गाँधी

संपादक मंडल : श्री सु. द. टाकसांडे, सदस्य सचिव श्रीमति तरूप्रभा शैल, सहा. निदे. (रा.भा.), श्री शिव कुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक

मानव निर्मित उपग्रह प्रसारण प्रणाली

लक्ष्मी कांत सिंह राठौर,
सहायक सचिव

प्राचीन काल में सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में बहुत दिक्कत होती थी । विशेष रूप से जब दो स्थानों के बीच दूरी अधिक होती थी तब यह कठिनाई और बढ़ जाती थी । आजकल दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक सूचना (आडियो एवं वीडियो तत्काल ही पहुँच जाती है । इसका श्रेय इलैक्ट्रॉनिक्स जगत की क्रांति को जाता है ।

विज्ञान की दुनिया में एक महत्वपूर्ण विकास हुआ है जिसका नाम है 'उपग्रह प्रसारण सेवा' । इस संचार सेवा में सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने (स्थानांतरित करने) के लिए मानव निर्मित उपग्रह का उपयोग किया जाता है । वह मानव निर्मित उपग्रह (कृत्रिम उपग्रह), जो संचार के उपयोग में लाया जाता है, उसे भू स्थिर (जियो स्टेशनरी उपग्रह) कहते हैं । यह उपग्रह पृथ्वी के सापेक्ष में स्थिर रहता है । वास्तव में यह पृथ्वी की घुमाव की गति के हिसाब से उसी गति में घूमता है तथा उसकी परिभ्रमण की दिशा वैसी ही होती है । यह उपग्रह पृथ्वी के भूमध्य रेखा के ऊपर 36000 कि.मी. में स्थापित रहता है । इसकी समयावधि भी पृथ्वी की ही समयावधि (अर्थात 24 घंटे) रहती है ।

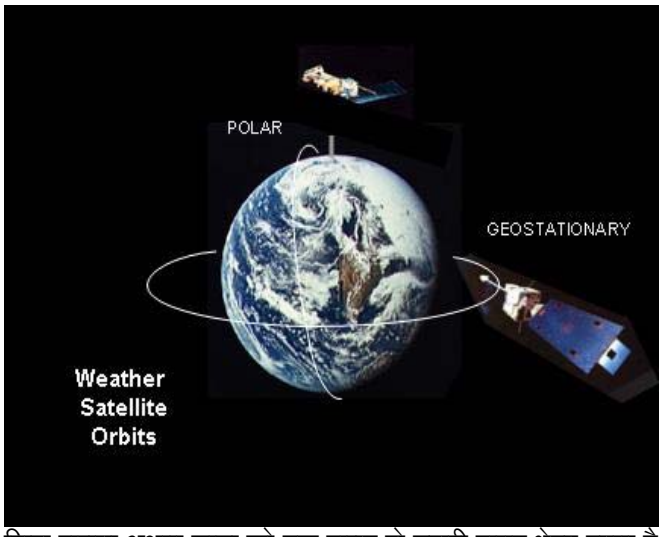

जिस सूचना अथवा डाटा को एक जगह से दूसरी जगह भेजा जाना है, उसे भू केन्द्र (अर्थ स्टेशन) के माध्यम से उपग्रह में कोडिंग करके भेजा जाता है, इस प्रक्रिया को अपलिंकिंग कहते हैं । उपग्रह उस अपलिंकिंग सूचना को ग्रहण करके उसे प्रवर्धित करके, अपने कवरेज क्षेत्र में तथा उससे जुड़े दूसरे उपग्रह को भेजता है । पूरे पृथ्वी को उपग्रह के माध्यम से सम्प्रेषित करने के लिए तीन उपग्रह 120^0 पर स्थापित होते हैं । एक-एक उपग्रह लगभग 40% क्षेत्र को कवर करता है । इस तरह तीन उपग्रह पूरे दुनिया को कवर कर लेता है ।

भू केन्द्र (अर्थ स्टेशन) से आने वाले सिग्नल को प्रवर्धित करके पृथ्वी की अपने कवरेज क्षेत्र में भेजता है तथा अन्य दो उपग्रह भी अपने-अपने कवरेज क्षेत्र में भेजते हैं । पृथ्वी में स्थापित रिसिविंग केन्द्र उस सूचना को ग्रहण करके प्रवर्धित करता है इस प्रक्रिया को डाउन लिंकिंग कहते हैं, तथा डिकोड करके मूल रूप में परिवर्तित कर देता है । इस तरह से उपग्रह दुनिया की एक छोर से दूसरी छोर तक सूचना प्रकाश की गति से 3×10^8 मि.प्रति से.) पहुँचा देता है । जो कि वाकई में एक आश्चर्यजनक कार्य है । यह केवल उपग्रह के आविष्कार से ही संभव हुआ है । आज हमारी दिन प्रति दिन की सूचना का संचार, क्षण भर में होना यह इस मानव निर्मित उपग्रह की देन है ।

******

सार्वजनिक उत्सव का सामाजिक महत्व

श्रीमती स्नेहल कुलकर्णी ,
उच्च श्रेणी लिपिक

त्योहार पर्व मानव समाज के लिए हर्षोल्लास का एक महत्वपूर्ण स्रोत है । त्योहार हमें आनंदपूर्वक जीने की प्रेरण देते हैं । त्योहार का मानव जीवन में विशेष महत्व है । जब त्योहार सार्वजनिक रूप से मनाया जाता है तो उसे उत्सव का रूप प्राप्त होता है ।

लोकमान्य तिलक ने गणेशोत्सव, शिवजयंती जैसे उत्सव सार्वजनिक रूप मनाने की शुरवात की । इसका एक ही कारण था कि सभी लोग एकत्रित हो जायें और अपने विचारों का आदान-प्रदान करें, मिल-जुल कर रहें , अपनी खुशियाँ एक-दूसरे में बाँटें । आज उन्हीं विचारों का कल्पवृक्ष बन गया है ।

सार्वजनिक गणेशोत्सव मनाने से अपनी परम्परा बनी रहती है । अपनी आने वाली पीढ़ी को एक आदर्श मिल जाता है । सार्वजनिक उत्सव में भाग लेने से अपने गुणों का विकास होता है । दूसरे लोगों को देखकर एक प्रेरणा मिल जाती है । हम भी कुछ कर सकते हैं ऐसा आत्म विश्वास आ जाता है ।

मनुष्य प्राणी आनन्द का अनुभव के लिए विशेष अवसरों की खोज में रहता है । आनंद का अनुभव लेने के लिए सार्वजनिक उत्सव एक माध्यम है । प्रत्येक भारतीय त्योहारों में एक इतिहास और एक संदेश छुपा हुआ है । हर साल उस त्योहार में हम इसकी याद दोहराते हैं । जैसे दशहरा जैसे त्योहार में रावण को जलाकर हम दुष्ट प्रवृत्ति को नष्ट कर देते हैं । गणेशोत्सव के बाद नवरात्री का उत्सव मनाया जाता है । सभी स्तर के लोग इसमें शामिल होकर अपना दु:ख भूलकर हँसी खुशी से मनाते हैं । आज कोई भी उत्सव किसी एक जाति धर्म तक सीमित नहीं रहा है । सभी जाति -धर्म के लोग एक-साथ आकर सभी उत्सव मनाते हैं । इससे हमें यही सीख मिलती है कि जीवन पद्धति चाहे अलग हो, सभी मानव एक हैं ।

स्वतंत्रता गणतंत्र दिन, जैसे राष्ट्रीय उत्सव मनाने से हम यह कभी नहीं भूलते कि कितनी कुरबानियाँ देकर हमें आजादी मिली है । उसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है ।

धार्मिक उत्सव सार्वजनिक रूप से मनाने के पीछे लोकमान्य तिलक का यही दृष्टिकोण था कि हम लोग इकट्ठा आकर देश का विकास करें, गुलामी से मुक्त हो, अपने साथ कला गुणों का विकास हो, सभी को सुख शांति मिले ।

आजकल सार्वजनिक उत्सव में इकट्ठा किये पैसों का विनियोग भी समाज उपयोगी कार्य के लिए किया जाता है । जरूरत पड़ने पर मेडिकल सहायता या किसी को उच्च शिक्षा लेनी है और उसके पास पैसा न हो तो आर्थिक मदद की जाती है ।

इसलिए हमारे समाज जीवन में सार्वजनिक उत्सव का अद्वितीय महत्व है और इसे बनाए रखना हमारा परम कर्तव्य है ।

(हिन्दी पखवाड़ा 2013 निबंध प्रतियोगिता से)

******